

कोकिल साई की गाऊं जनम वाधाई।
मैया सुखदेवी ने है नव निधि पाई॥
मैया भाग्य जननी हो गद् गद् फूली
बाल मुख चंद्र देखि तन सुधि भूली
प्रेम के हिंडोले मैया बार बार झूली
नौबत की धुनि भई बाजे शहनाई॥

बाबा की तपस्या आज सफल भई है
लाड़लो लालनु मिलियो मंगल मई है
सिंधु वासियो पै भए दाहिने दर्ई है
भए धन्य मीरपुर लोग ओ लुगाई॥

आत्माराम स्वामी किए राम गुन गान
तांको फल बाल मिलियो प्रेमी प्रधान
चित के उदार बाबा दिए बहु दान
देत है वाधाई सब हियें हुलसाई॥

प्रेम के दातार साई बाल रूप धरे हैं
सुर मुनि गगन से कल्प फूल झरे हैं
जननी के स्तन में सुधा दूध भरे हैं
बार बार पान करे सन्त सुखदाई॥

नाचें और गावें मिल सब नर नारी
देत हैं वाधाई सन्त आंगन मंझारी
चिरु जीवे लाल यह आशीश उचारी
अमड़ि गरीबि की है भई मन भाई॥